Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 05-05-2020; Accepted: 20-05-2020; Published: 06-06-2020
Volume 1; Issue 1; 2020; Page No. 57-58

प्रेमचन्द का नारी जीवन–दर्शन

वंदना निगम
अध्यापक, हिन्दी, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय धवारी सतना, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

नारी केवल माता है और उसके उपरान्त वह जो कुछ भी है सब मातृत्व का उपक्रम मात्र है। मातृत्व संसार की सबसे बड़ी साधना है, सबसे बड़ी तपस्या, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है। एक शब्द में मैं उसे लय कहूँगा जीवन का व्यक्तित्व का, और नारीत्व का भी'' (प्रेमचन्द)

प्रेमचन्द जी नारी का अध्ययन निकट से किया है। नारी का चित्रण करते समय उनका ध्यान पूर्ण रूपेण आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रहा, उन्हांने नारी के चरित्र को अंकित करते समय उसके मानसिक संघर्ष अन्तद्वन्द्व का जो चित्रण किया है वह नारी की अनेक समस्याओं को प्रकट करता है। प्रेमचन्द्र की नारी पारिवारिक तथा सामाजिक संघर्षों के मध्य और भी निखरी और स्पष्ट बन गयी है। भारतीय नारी का व्यक्तित्व कौटुम्बिक व्यवस्थाओं तक सीमित रहा है। चूल्हा चौका ही उसके जीवन का ध्येय रहा है। प्रेमचन्द की दृष्टि में नारी पुरूष की सहचरी ही नही वरन् अर्द्धांगिनी भी है, विवाह और प्रेम के सूत्रों में दो व्यक्तियों के बंध जाने के अनन्तर उनमें शारीरिक पार्थक्य भले ही हो जाये। पर आध्यात्मिक पार्थक्य कमी भी सम्भव नही है। प्रेमचन्द प्रेम को नारी की अदम्य और अलौकिक शक्ति मानते थे। प्रेम की वह ज्योति है जिसके सहारे नारी जीवित रहती है यही उसकी आत्मा का बल है। प्रेम की यही प्रवृत्ति चरित्र विकास में सहायता प्रदान करती है। इसी प्रेम को लेकर प्रेमचन्द ने नारी को अपने उपन्यासों में प्रेयसि, पत्नी एवं माता के रूप में व्यक्त किया है। प्रेमचन्द नारी पक्षों के विभिन्न दृष्टियों से अध्ययन किया है –

(1) सभ्रान्त नारी (2) गरीब मजदूर नारी (3) अनपढ़ अशिक्षित नारी
(4) भारतीय पाश्चात्य नारी

सभ्रान्त नारी

नारी के सर्वागींण विकास के लिए सर्वप्रथम प्रेमचन्द उसे पूर्ण शिक्षित देखना चाहते थे उन्ही के शब्दो में –

''जब तक स्त्रियाँ शिक्षित नहीं होगी और सब कानून अधिकार उनको बराबर न मिल जायेगें तब तक महज बराबर काम करने से ही काम नही चलेगा।''

स्त्रियों के सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, आर्थिक तथा राजनैतिक उत्थान के लिए प्रेमचन्द्र उनके लिए अनिवार्य शिक्षा के साथ–साथ समानधिकारों के प्रस्तावों का सदैव अनुमोदन करते है। स्त्री न तो धन दौलत है और न पशु। वह तो पुरूष के समान अस्तित्ववान चेतनप्राणी है, संसार में जितना महत्व पुरूष का है उससे कही अधिक स्त्री का है।

गरीब मजदूर नारी

प्रेमचन्द के नारी पात्रों में भी कतिपय शोषक है। अधिकांश शोषित उनके नारी पात्रों में कुछ के पास भूख से अधिक अन्न है और कुछ के पास अन्न से अधिक भूख कुछ रेशमी वस्त्रों से भी सन्तुष्ट नही होती और कुछ आधी धोती पहन कर जीवन के दिन बिता रही है। उपन्यास में नारी पात्रों का वर्गीकरण सामाजिक दृष्टि से तीन प्रकार से हो सकता है – उच्च वर्ग, मध्यवर्ग, निम्न वर्ग के नारियों का चरित्रों की अभिव्यक्ति 'गोदान', 'गबन', 'कर्मभूमि' और प्रेमाश्रय में हुई है। इस वर्ग के प्रति प्रेमचन्द जी की सहानुभूति है गोदान के धनिया का जीवन दो तिहाई क्षुधा और संताप कर ही बीत गये भूखे और नंगे रहकर भी कर्ज के मार से अवकाश पाने के लिए आकांक्षी है –

''गोदान की सिलिया को जाति की चमारिन है उसे गाँव का उच्च वर्ग कहलाने वाला व्यक्ति जिले कि गाँव के लोग ब्राम्हण समझ कर पूजते है, अपनी रैखल बनाकर रखे हुए है, मातादीन सीलिया से शारीरिक संबंध रखता है शादी की बात करने पर मारपीट करता है। इस प्रकार सिलिया एक नारी नही बल्कि निम्नजाति के सम्पूर्ण नारी वर्ग का प्रतीक है जिसका उत्कृष्ट चित्रण गोदान में दिखाया गया है। आज भी निम्न वर्ग की स्त्रियों की हालत वही है जो 'गोदान' में सिलिया की है।'' (1)

अपढ़ अशिक्षित नारी

प्रेमचन्द जी के उपन्यासों एवं कहानियों में अपढ़ और अशिक्षित नारी पात्रों का समावेश किया गया है। 'गोदान' की धनिया अपढ़ और अशिक्षित है वह घर के उत्तरदायित्व से लेकर पंचायत, अदालत में जवाब देही तक सभी कार्यो में होरी का साथ देती है। घर के लिए कुशल पत्नी है, कृषक का जीवन में सहचरी है, आपत्ति के क्षणों मे कुशलता पूर्वक मन्त्रित्व करती है। धनिया अर्थाभाव और संयुक्त परिवार की जिम्मेदारी के कारण वह टूट कर बिखर जाती है। दिन रात कठिन परिश्रम करने के बाद भी कभी भरपेट भाजन और वस्त्र नहीं मिला उसकी धोती इतनी फट जाती है कि उसे पहनना मुश्किल होता है, लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं रहते कि वह नयी साड़ी ले सके। दहेज प्रथा का वर्णन 'गोदान' में अशिक्षित सोना के माध्यम से कराया गया है। अशिक्षित सोना पिता की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक न होने के कारण होने वाले भावी पति को सन्देश भेजती है कि ''अगर तुमने एक पैसा भी दहेज लिया तो तुमसे ब्याह न करूँगी'' दहेज के अभाव में कम आयु वाली कन्या का विवाह अधिक आयु वाले पुरूष से हो जाता है। इसी तरह 'सेवासदन' में सुमन निर्मला में निर्मला, गबन में रतन और गोदान में रूपा का विवाह सम्पन्न हो जाता है। अनमेल विवाह के प्रति प्रेमचन्द में गहरी चिन्ता थी। विधवा विवाह, सामाजिक कुरूचि, बाल विवाह, वृद्ध विवाह तथा पौष्टिक आहार एवं रोगोपयोगी औषधि के अभाव में अकाल मृत्यु आदि गिनाया है।

भारतीय और पाश्चात्य नारी

प्रेमचन्द को नारी हृदय के बल, सामर्थ्य, त्याग और क्षमता पर बड़ा विश्वास था उन्हे ज्ञात था कि प्रेम नारी हृदय का चिर सत्य है, फिर भी वह देश और समाज के हित के लिए भारतीय नारी अपने स्वार्थ की

हत्या कर देती है। प्रेमचन्द पश्चिमी नारी के समान ही अपने अस्तित्व को नष्ट कर देने वाली भारतीय नारी के घोर विरोधी है –

''पश्चिम की स्त्री आज गृह स्वामिनी नही रहना चाहती भोग विदग्ध लालसा ने उसे उच्छुखला बना दिया है। वह अपनी लज्जा और गरिमा को जो उसकी सबसे बड़ी विभूति थी, चंचलता और आमोद–प्रमोद का होम कर रही है, उनकी लालसाओं ने उन्हे इतना पराभूत कर दिया है कि वे अपनी लज्जा की भी रक्षा नही कर सकती। नारी की इससे अधिक और क्या अधोगति हो सकती है।'' (2)

प्रेमचन्द जी ने नारी को सिर्फ प्रेरक शक्ति के रूप में ही नही बल्कि जीवन के हर क्षेत्र पुरूष के कन्धे से कन्धे लगाकर काम करने वाले साथी के रूप में देखा है। उन्होंने नारी–हृदय की उन शाश्वत भावनाओं के आधार पर अपनी रचनाएं की जिनकी युगों से उपेक्षा होती आयी थी। इसलिए प्रेमचन्द की नारी पारिवारिक तथा सामाजिक संघर्षों के बीच और भी निखरी है। 'रंगभूमि' में सोफी भी इसी चेतना का प्रतीक है नारी के स्वावलम्बन के समर्थक थे। 'सेवासदन' में उन्होंने वेश्यावृत्ति की समस्या का विस्तार से चित्रण किया है –

''भारतीय नारी का सबसे बड़ा धर्म पतिव्रत हैं पतिव्रत ही उसका धर्म–कर्म, पूजा–पाठ तीर्थ और व्रत है। पति की मृत्यु के अनन्तर पति की मर्यादा की रक्षा करना ही वह अपना कर्तव्य समझती है। (3)

नारी का प्रेयसी, माता एवं अर्धागिनी के रूप में प्रेमचन्द के उपन्यास में अधिक निखरा है। गोदान में मेहता गोविन्दी से कहता है –

''नारी केवल माता है और इसके उपरान्त वह जो कुछ है, वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र है।'' मातृत्व संसार की सबसे बड़ी साधना है, सबसे बड़ी तपस्या, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है। एक शब्द में मैं उसे लय कहूँगा। जीवन का, व्यक्तित्व का, और नारीत्व का भी।'' (4)

प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी सुधार की भी भावना रही है। प्रेमचन्द अपनी लेखनी द्वारा नारी के विभिन्न पक्षों को उभारा है, उन्होंने अपने उपन्यासों में आन्दोलन के माध्यम से अनाथाश्रम, विधवाश्रम, वेश्या के लिए सदन की स्थापना की गई है। इस वर्ग में वरदान प्रतिज्ञा, सेवासदन, निर्मला, गबन, कायाकल्प आदि उपन्यासों को समाहित किया जा सकता है। 'वरदान' में बाल विवाह तथा अनमेल विवाह की कुरीति को आधार बनाकर घटनाओं की संयोजना की है। 'प्रतिज्ञा' में विधुर अमृतराय विधवा विवाह की प्रतिज्ञा से प्रारम्भ होकर वनिताश्रम की स्थापना कर समापन होता है 'सेवासदन' में प्रेमचन्द ने नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, वेश्यावृत्ति आदि का निदान सुधारात्मक ढ़ंग से निरूपित किया है।

प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में समग्र नारी जीवन की सूक्ष्मताओं को बड़ी सफलता के साथ समेटनी का प्रयत्न किया है। उनका चित्रण धार्मिक, सामाजिक, जातीय तथा राजनीतिक रूढ़िवादिता से सर्वथा रहित है। उन्हें न तो समस्त प्राचीन नारी–भावनाओं से एकदम घृणा है और न समस्त नवीन के प्रति किसी प्रकार की अत्यासक्ति। पुरातन में जो शिव है सुन्दर है उसे बिना ननुनच के उन्होंने ग्रहण किया है और आधुनिकता में जो सत्य होने के कारण ग्रहणीय है उसे भी बिना वितर्क के अंगीकार कर एक ऐसा पुष्प स्तवक सँवारा है जिससे सभी नारियाँ सुवासित हो गयी है।

प्रेमचन्द के लेखन का यह मूल अधिकार रहा है कि नारी चाहे स्वर्ण हो या असवर्ण यदि उसके अन्दर चारित्रिक दृढ़ता है तो वह अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होगी। अतः ऐसी स्त्री को सदैव हर सम्भव प्रयत्न से अपने चरित्र की रक्षा करनी चाहिए इसी भाव का निर्वाह प्रेमचन्द के नारी–पात्रों में सर्वत्र हुआ है चाहे वे विवाहित स्त्रियाँ हो अथवा अविवाहित प्रेमिकाएँ। साहित्य में नारी, नारी प्रेम के उस स्वरूप के जिससे वह सरस, आहनदक एवं आकर्षण एवं प्रेरणाप्रद बन जाता है, उसके अनेक उदाहरण उपलब्ध हो जाते है। कहीं वह प्रेम माता के निर्विकार वात्सल्य के रूप में छलका है तो कही पति प्रेम के रूप में प्रवाहित हुआ है। कही प्रेमिका का भीनी चितवन के रूप में उसने अपने प्रेमी को छला है, तो कही वह राष्ट्रीय भावना को उदबुद्ध होकर राष्ट्र की पावन बलिदेवी पर ही समर्पित हो गया है। लेकिन यह उसकी सर्वोपरि विशेषता रही है कि वह सर्वत्र पवित्र बना रहा कहीं पर उसके आंशिक अपावनता का लेश भी नही आ पाया। इस प्रकार प्रेमचन्द जी ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। भारतीय परिवेश में पत्नी बढ़ी एवं संस्कारित नारी के अनेक रूप है। कहीं वह अशिक्षिता किन्तु पति परायण, आज्ञाकारी नारी है तो कही उसमें रूढ़ि अन्धविश्वास एवं सब कुछ चुपचाप सहन कर लेने वाली नारी का दैन्य पूर्ण रूप मिलता है। पढ़ी लिखी नारियाँ प्रेमचन्द के उपन्यासों में अपने अधिकार के प्रति जागरूक तो हो रही है किन्तु समूची नारी जाति के लिए कुछ करने की बलवती आकाँक्षा कम दिखाई देती है। यह युगीन चेतना का ही प्रतिफलन है। पश्चिमी सभ्यता में पली नारियाँ देह सुख एवं भौतिक समृद्धि को ही जीवन का सर्वस्व मानती है। कुल मिलाकर प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी का कैन्वास बहुत विस्तृत है।

संदर्भ सूची

1. गेदान प्रेमचन्द
2. कर्मभूमि प्रेमचन्द
3. सेवासदनः प्रेमचन्द
4. निर्मला प्रेमचन्द
5. प्रेमचन्द और नानक सिंह के उपन्यासः डा0 तिलकराज (141 पेज)
6. प्रेमचन्द्र चिन्तन और कला :इन्द्रनाथ मदान (223 पेज)
7. प्रेमचन्द्र चिन्तन और कला इन्द्रनाथ मदान (225 पेज)
8. प्रेमचन्द चिन्तन और कला इन्द्रनाथ मदान
9. प्रेमचन्द एक विवेचन